Shodhparak Vaicharik Patrika

RNI No. : UPBIL/2013/55327

...ed Journal

...ISSUE-7 (Part-2) March- 2019

The Research Series

द्विभाषीय - मासिक

Shrinkhala

शृंखला

A Multi-Disciplinary International Journal

Google

ImpactFactor
= 5.921 (2018)
= 0.543 (2015)
= 6.038 (2018)

Shrinkhala UGC approved listed

P: ISSN NO.: 2321-290X   RNI : UPBIL/2013/55327
E: ISSN NO.: 2349-980X
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika   VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019

Contents (Hindi Papers)

S.No.	Particulars	Subject	Page No. From	Page No. To
1	प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का समीक्षात्मक अध्ययन सर्पराज रामानन्द सागर, भागलपुर, बिहार, भारत	अर्थशास्त्र	H-01	H-05
2	बी0एड0 कॉलेज में कार्यरत शिक्षक – शिक्षकाओं की अपने कार्य सन्तुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रमोद कुमार शर्मा, जयपुर, राजस्थान, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-06	H-08
3	दूरवर्ती शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कृष्णा, जयपुर, राजस्थान, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-09	H-10
4	छत्तीसगढ़ के शासकीय व अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यो के दृष्टिकोण से संपूर्ण गुणवत्ता मूल्यांकन : प्रशिक्षण के उददेश्य एवं अवधि के संदर्भ में एक अध्ययन सत्यप्रकाश यादव एवम् प्रकृति जेम्स, छत्तीसगढ़, बिलासपुर, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-11	H-15
5	भारत में मुस्लिम महिलाएं एवं महिला सशक्तिकरण– तीन तलाक एक्ट के विशेष संदर्भ में संक्षिप्त अध्ययन ज्योति मेहरा, अलवर, राजस्थान, भारत	राजनीतिक विज्ञान	H-16	H-20
6	वैदिक समाज में स्त्री और उनकी दशा दिनेश सिंह, गंगेश्वरी, अमरोहा, भारत	इतिहास विभाग	H-21	H-24
7	राजस्थानी भाषा के विकास में चारण साहित्य का योगदान एकता, जोधपुर, राजस्थान, भारत	इतिहास विभाग	H-25	H-27
8	राजस्थान के भरतपुर जिले में आर्थिक विकास एवं अपराधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन शैलेन्द्र कुमार सैदावत, जयपुर, राजस्थान, भारत	भूगोल	H-28	H-31
9	विकास खण्ड दूबेपुर (जनपद सुलतानपुर, उ0प्र0) का सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण रवि कुमार, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत	भूगोल	H-32	H-37
10	पत्रकारिता में प्रगतिवादी दृष्टिकोण के हिमायती– हेतु भारद्वाज – एक परिचय अशोक धवन, अजमेर, राजस्थान, भारत	हिन्दी	H-38	H-40
11	महिला सशक्तिकरण व भारतीय कानून निधि शर्मा, आगरा, उततर प्रदेश, भारत	विधि विभाग	H-41	H-44
12	मोटापे से ग्रसित कार्यशील एवं गृहिणी महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर पर योगासन, व्यायाम एवं आहारीय परामर्श के सम्मिलित प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन प्रगति देसाई एवम् मेघा परमार, इन्दौर (म.प्र.) भारत	गृहविज्ञान	H-45	H-49
13	महात्मा ज्योतिबा फुले के सामाजिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन पीयूष हर्षवाल, चूरू, राजस्थान, भारत	राजनीतिक विज्ञान	H-50	H-53
14	भारत में गठबंधन सरकारों का विदेश नीति पर प्रभाव हंसा चौधरी, जयपुर, राजस्थान, भारत	राजनीतिक विज्ञान	H-54	H-57
15	गुटनिरपेक्षता : उद्देश्य, विशेषताएं एवं प्रासंगिकता अग्निदेव, अलवर, राजस्थान, भारत	राजनीतिक विज्ञान	H-58	H-65

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X

RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019

छत्तीसगढ़ के शासकीय व अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यो के दृष्टिकोण से संपूर्ण गुणवत्ता मूल्यांकन : प्रशिक्षण के उददेश्य एवं अवधि के सदंर्भ में एक अध्ययन

सत्यप्रकाश यादव
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
पं सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय,
छत्तीसगढ़, बिलासपुर, भारत

प्रकृति जेम्स
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा शास्त्र विभाग,
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय,
छत्तीसगढ़, बिलासपुर, भारत

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षक से हमारी अपेक्षाएँ बढ़ गयी है, आज उसे जहां स्वयं विद्यार्थी, समाज, शाला, व्यवसाय इत्यादि के प्रति समर्पित होना है, वहीं विषय–विशेषज्ञ, चिंतक के रूप में भी अपने को साबित करना है। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1996 के अनुसार शिक्षा के चार स्तम्भ– ज्ञान के लिए सीखना, स्व–अस्तित्व के लिए सीखना, कार्य के लिए सीखना एवं सहअस्तित्व के लिए सीखना है, इन चार स्तम्भों का आधार शिक्षक है। अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं, इन अपेक्षाओं को पूरा करने हेतु एक कुशल शिक्षक तैयार करना होगा और यह तभी संभव है जब देश में शिक्षक को उत्तम प्रशिक्षण देने के लिए मानक के अनुसार सुविधा सम्पन्न उच्च कोटि शासकीय– अशासकीय की शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थायें हो।

मुख्य शब्द : NCERT, NUEPA, डाईट, गुणवत्ता।

प्रस्तावना

शिक्षा की दृष्टि से ''प्रारंभिक शिक्षा का लोकव्यापीकरण'', ''गुणवत्तापूर्ण सभी के लिए शिक्षा'', आदि राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख लक्ष्य रहें हैं। इसी क्रम में 6 से 14 वर्ष की आयु समूह के बच्चों को अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा देना, आज उनका मौलिक अधिकार बन गया है, साथ ही यह लक्ष्य देश का संवैधानिक उत्तरदायित्व भी हो गया है। उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में हम यह कह सकते हैं शिक्षण जैसे उत्तम कार्य में शिक्षक की भूमिका केन्द्रीय हो गई है। वर्तमान समय में शिक्षक से हमारी अपेक्षाएँ बढ़ गयी है, आज उसे जहां स्वयंविद्यार्थी, समाज, शाला, व्यवसाय इत्यादि के प्रति समर्पित होना है, वहीं विषय–विशेषज्ञ, चिंतक के रूप में भी अपने को साबित करना है। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1996 के अनुसार शिक्षा के चार स्तम्भ– ज्ञान के लिए सीखना, स्व–अस्तित्व के लिए सीखना, कार्य के लिए सीखना एवं सहअस्तित्व के लिए सीखना है, इन चार स्तम्भों का आधार शिक्षक है। अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं, इन अपेक्षाओं को पूरा करने हेतु एक कुशल शिक्षक तैयार करना होगा और यह तभी संभव है जब देश में शिक्षक को उत्तम प्रशिक्षण देने के लिए मानक के अनुसार सुविधा सम्पन्न उच्च कोटि शासकीय–अशासकीय की शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थायें हो। देश के सभी राज्यों में ऐसी संस्थाओं के गठन हेतु विभिन्न स्तरों पर प्रयास किये जा रहें है।

इसी तारतम्य में स्थानीय एवं जिला स्तर पर प्रारंभिक शालाओं के शिक्षकों को सेवापूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण देने तथा सभी प्रकार के उत्तरदायित्व और संसाधन उपलब्ध कराने के लिए शासकीय एवं अशासकीय डी. एल.एड. शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थायें संचालित की गयी है और इनकी संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। इन संस्थाओ के प्रमुख लक्ष्य निम्नानुसार वर्णित हैं –

1. प्रारंभिक शिक्षा का लोकव्यापीकरण करना।
2. प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सफल बनाने की दृष्टि से अकादमिक तथा अन्य संसाधनों की पूर्ति करना।
3. प्रशिक्षण संस्थायें स्वयं को इतना उन्नत बनायेगी कि उनसे प्रारंभिक शिक्षा को आगे बढ़ाने में सहायता मिल सके।
4. जिले की विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं को विकास की दिशा में आगे बढ़ाने के लिये योजनाओं का निर्माण एवं उनका क्रियान्वयन करना।

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019

अध्यापकों को उच्चस्तरीय सेवापूर्व–सेवाकालीन प्रशिक्षण देना।

अध्यापक शिक्षण–अधिगम प्रकिया में आस–पास के साधनों का अधिकतम प्रयोग कर सकें ।

प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययन–अध्यापन की सहायक सामग्री का निर्माण करना तथा मूल्यांकन उपकरण निर्मित करना।

क्रियात्मक अनुसंधान पर बल देना।

दिव्यांगों एवं वंचित वर्ग के बच्चों की समावेशी शिक्षा की व्यवस्था करना ।

उपरोक्त लक्ष्यों को पूरा करने हेतु प्रारम्भिक कक्षाओं के शिक्षकों को उच्च स्तर का प्रशिक्षण देने एवं सभी प्रकार के संसाधन हेतु डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाए स्थापित की गयी। डी.एल.एड., अध्यापक शिक्षा का व्यावसायिक पाठ्यकम है जिसका उद्देश्य कक्षा आठवीं तक के अध्यापकों को तैयार करना है। डी.एल.एड. पाठ्यकम का उद्देश्य समाज की सहभागिता से सामाजिक विषमताओं को दूर करते हुए समावेशी स्कूल पर्यावरण में सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने की बुनियादी आवश्यकता को पूर्ण करना है। शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को कार्य करते लम्बा समय बीत गया है अब उनके कार्य प्रणाली, अध्यापकीय व्यवहार, एवं दक्षता का मूल्यांकन का उपयुक्त समय आ चुका है। देश के प्रत्येक राज्य के प्रत्येक जिले में शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान संचालित हो रहे है यह शिक्षक–प्रशिक्षण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इन संस्थानों को जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यकम (DPEP) तथा सर्वशिक्षा अभियान जैसे महत्त्वाकांक्षी राष्ट्रीय योजनाओं के सफल कियान्वयन का आधार मानते हुये, इन्हें सभी प्रकार की अधुनातन सुविधायें एवं तकनीक उपलब्ध कराने हैं जिसके लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नयी दिल्ली (NCTE) ने मानक व दिशा निर्देश निर्धारित किये हैं।

साहित्यावलोकन

बनर्जी (1967) ने भारत में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण पर अध्ययन किया। इनके अध्ययन के निम्न परिणाम थे कि शिक्षक प्रशिक्षण में बहुत सी कमियां थीं। परिवर्तनों और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षक प्रशिक्षण में आमूल परिवर्तन और समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षक प्रशिक्षण में आमूल परिवर्तन आवश्यक था। मूल्यांकन व शिक्षण पद्धतियां पुरानी थीं।

मूलैया (1968) ने मध्यप्रदेश में शिक्षक प्रशिक्षण की स्थिति का अध्ययन किया। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि मध्य प्रदेश के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय अभावग्रस्त थे। विद्यालयों में संसाधनों की कमी थी। मूल्यांकन और शिक्षण विधि परंपरागत थी। पुरुषों की संख्या महिलाओं की अपेक्षा अधिक थी।

गुप्ता (1980) द्वारा माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के यह परिणाम निकले कि शिक्षक प्रशिक्षकों की शैक्षिक योग्यता एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण में सह संबंध होता है। शिक्षण अनुभवों का प्रशिक्षण कार्य पर प्रभाव पड़ता है। समाजोपयोगी कार्य व्यावसायीकरण सामुदायिक कार्य व शिक्षण पद्धति आदि का ज्ञान देना आवश्यक है।

गुप्ता (1982) द्वारा भारत में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन किया गया है। इस अध्ययन के ये परिणाम प्राप्त हुए कि 61 से 70 के बीच संस्थानों की वृद्धि हुई है। 83 प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षक पुरूष थे। प्रशिक्षक संस्थानों की कार्य प्रणाली प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन प्रणाली परंपरागत थी। ज्यादातर गांवों से संबंधित थे। केवल 18 प्रतिशत छात्र एम.एड. उपाधि प्राप्त थे। शारीरिक प्रशिक्षण कार्यकमों को महत्व नहीं दिया जाता था। स्थानीय संस्थानों की व्यवस्था से ठीक थी। वाद–विवाद विधि ज्यादा प्रचलित थी।

राय (1982) ने उत्तर प्रदेश तथा गुजरात के शिक्षा महाविद्यालयों और अभ्यास शिक्षण शालाओं (Practice Teaching Schools) से संबंधित समस्याओं पर अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला है कि :–

1. शिक्षा महाविद्यालयों एवं अभ्यास शालाओं के परिप्रेक्ष्य में अनेकों कमियाँ उजागर हुई हैं। शिक्षा महाविद्यालयों एवं अभ्यास शालाओं के बीच परस्पर सहयोग के अभाव के साथ–साथ यह भी पता चलता है कि शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों द्वारा अभ्यास शालाओं में जाने से उनके कार्यक्रम, एवं अन्य नियमित गतिविधियों में बाधा उत्पन्न होती है।
2. इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि अभ्यास शालाओं एवं शिक्षक– प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रभावशाली सहयोग होना चाहिए।

सिन्हा (1982) ने बिहार में शिक्षक–शिक्षा विषय पर अध्ययन किया है और निष्कर्ष निकाला है कि –

1. प्राथमिक स्तर पर लगभग 60 प्रतिशत शिक्षक–प्रशिक्षक बी.एड. प्रशिक्षित हैं परन्तु उनका कार्य संतोषजनक नहीं पाया गया।
2. 70 प्रतिशत महाविद्यालय में स्वयं का भवन नहीं पाया गया और 65 प्रतिशत महाविद्यालयों में दयनीय स्थिति वाले भवन पाये गये।
3. अधिकांश शिक्षा महाविद्यालयों में स्टॉफ, पुस्तकालय, उपकरण तथा प्रयोगशाला अपर्याप्त पाये गये।
4. आधुनिक नवाचारी कार्यकमों का समावेश अभी तक शिक्षक–शिक्षा कार्यकमों में नहीं हो पाया है।
5. सेवाकालीन प्रशिक्षण न तो प्रभावशाली ढंग से दिये जाते हैं और न ही अध्यापन अभ्यास कार्य कराने में पर्यवेक्षक शिक्षक पर्याप्त ध्यान देते।

अध्ययन का औचित्य

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (NUEPA) तथा डाईट जैसी राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय संस्थाओं के दवारा योजना के कियान्वयन, लक्ष्य प्राप्ति तथा उससे अपेक्षाओं पर किये गए राष्ट्र स्तरीय मूल्यांकन निष्कर्ष बहुत अधिक सकारात्मक एवं उत्साहवर्धक नहीं रहे है।

इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ में संचालित डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में मानको के अनुरूप कार्यो का मूल्यांकन करना विशेष शैक्षिक महत्व का होगा क्योंकि

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X

Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019

...शोध अध्ययन के निष्कर्ष के प्रकाश में डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं की वास्तविक स्थितियों का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा और समय रहते ही योजनाबद्ध ढंग से उनकी कमियों को सुधारने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। इस अध्ययन में यह पता लगाना कि छत्तीसगढ़ राज्य की शासकीय एवं अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में सेवारत आचार्य अपने–अपने संस्थाओं कि व्यवस्थाओ सुविधाओ, प्रयासो, कियाकलापों, गुणवत्ता आदि से कितना परिचित है उनकी सजगता इस ओर कितनी है विशेष महत्व का है क्योंकि आचार्यो की ऐसी ही अपेक्षाओं, अवबोध तथा सजगता पर राज्य में डी.एल.एड. प्रशिक्षण की योजना की सफलता निर्भर करती है। इसलिए एक ऐसा शोध अध्ययन जिससे निम्नलिखित शोध-प्रश्नों के हल ढूंढा जाये, छत्तीसगढ़ राज्य में सुदृढ़ शैक्षिक शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत औचित्यपूर्ण होगा क्योंकि इस नवोदित राज्य में इस प्रकार का अध्ययन अभी तक चरितार्थ नहीं हुआ है। इस सर्वेक्षणात्मक अध्ययन के निष्कर्ष राज्य के लिए दिशा निर्देशक होगा।

अध्ययन का उददेश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्नांकित उददेश्य निर्धारित किये गये हैं –

शासकीय एव अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण की संस्थाओं मे प्रशिक्षण के उददेश्य एव प्रशिक्षण की अवधि का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के उददेश्यों की जांच हेतु निम्नांकित परिकल्पनायें बनायी गयी हैं –

1. शासकीय एवं अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण की संस्थाओं में NCTE के मानक के अनुरूप प्रशिक्षण के उददेश्यो को पूरा करने का सकारात्मक प्रयास किया जाता है।
2. शासकीय एव अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण की संस्थाओं मे NCTE के मानक के अनुरूप प्रशिक्षण की निश्चित अवधि मे ही प्रशिक्षण को पूरा करने का सकारात्मक प्रयास किया जाता है।

प्रस्तावित शोध विधि (Research Method)

प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णात्मक अध्ययन है जिसमे सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जायेगा।

न्यादर्श (Sample)

न्यादर्श के रूप में शासकीय एवं अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में कार्यरत प्राचार्य हैं। छत्तीसगढ़ के 27 जिलों में से 16 जिलों में शासकीय डाईटस एवं दो जिलों में दो बी.टी.आई संचालित हो रहे है। इन्हीं जिलो के 18 अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं को यादृच्छिक विधि से चुना गया है ।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत अध्ययन में चर एवं उनके स्तर निम्नानुसार है –

स्वतंत्र चर (Independent Variable)

डाईट/डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं हेतु राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली द्वारा निर्धारित कार्यकम एवं मानक प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्र चर हैं।

आश्रित चर (Dependent Variable)

शासकीय एवं अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में सम्पूर्ण गुणवत्ता का गुणात्मक सूचक (Indicator) इस अध्ययन के आश्रित चर है जो राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा वर्णित है, के माध्यम से किया गया है।

उपकरण (Tool)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है।

संस्था के प्राचार्य हेतु साक्षात्कार पत्रक

प्रदत्तों का विश्लेषण

1. डी.एल.एड. प्रशिक्षण की अवधि दो.वर्ष रखी गई है, क्या आप इसे उचित मानते हैं ?

हां	नहीं
94.45%	05.56%

94.45 प्रतिशत प्राचार्यो ने प्रशिक्षण की अवधि दो वर्ष उचित माना है जबकि 05.56 प्रतिशत प्राचार्यों ने इसे अस्वीकार किया है।

2. डी.एल.एड. प्रशिक्षण का शुल्क आपकी दृष्टि से उचित है।

हां	नहीं
77.78%	22.22

77.78 प्रतिशत प्राचार्यो ने डी.एल.एड. का प्रशिक्षण शुल्क को उचित माना है जबकि 22.22 प्रतिशत प्राचायों ने इसे अस्वीकार किया है।

3. द्विवर्षीय प्रशिक्षण–अवधि के प्रत्येक वर्ष में कुल कार्य दिवस कम से कम 200 दिन का है। क्या इसे आप सुविधाजनक मानते हैं ?

हां	नहीं
94.45%	5.55%

94.45% प्राचार्यो ने प्रशिक्षण अवधि में 200 कार्य दिवस पर को उचित मानते है जबकि 5.55% प्राचार्य इस सुविधाजनक नही मानते हैं।

4. क्या प्रशिक्षण में प्रति सप्ताह 36 घण्टे कार्य करने का लक्ष्य पूरा होता है ?

हां	नहीं
88.89% (16)	11.11% (2)

88.89% प्राचार्यो ने स्वीकार किया है कि प्रशिक्षण में प्रति सप्ताह 36 घण्टे कार्य का लक्ष्य पूरा किया जाता है जबकि 11.11% प्राचार्य इसे नहीं मानते है।

5. क्या छात्राध्यापकों की उपस्थिति प्रायोगिक सहित अकादमिक कार्यो में 80 प्रतिशत तथा स्कूल इन्टर्नशिप में 90 प्रतिशत हो पाती है ?

हां	नहीं
77.78% (14)	22.22% (4)

77.78% प्राचार्यो छात्राध्यापको की उपस्थिति स्वीकारते है जबकि 22.22% प्राचार्य छात्राध्यापको की उपस्थिति से संतुष्ट नहीं हैं।

6. डी.एल.एड. प्रशिक्षण के नये पाठ्यक्रम को कियान्वयन करके इसके माध्यम से छात्राध्यापकों को पहली कक्षा से आठवीं कक्षा के अध्यापन हेतु क्षमतावान व

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019

नवाचारी विचारों के अध्यापक तैयार करना है क्या आपके मत से इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नया पाठ्यकम सक्षम है ?

हां	नहीं
88.88% (16)	11.12% (4)

डी.एल.एड. के नये पाठ्यकम को 88.88% प्राचार्य सक्षम मानते है जबकि 11.12% प्राचार्य इसे सक्षम नही मानते।

7. क्या आपके मत से प्रशिक्षार्थियों की कक्षा समावेशी बनाने में समुदाय का सकिय सहयोग मिलता है ?

हां	नहीं
61.11% (11)	38.89 % (7)

61.11% प्राचार्यो ने समुदाय के सकिय सहयोग को माना है। 38.89% प्राचार्य समुदाय के सहयोग नही मिलने की बात करते है।

विवेचना

प्रशिक्षण के उद्देश्य एवं अवधि पर प्राचार्यो के निष्कर्ष से यह कहा जा सकता है कि डी.एल.एड. पाठ्यकम की अवधि जो छब्ज्म् में मानक अनुरूप दो शैक्षणिक अवधि का होगा, उचित है इसे सभी प्राचार्यो ने भी स्वीकार किया है क्योंकि दो वर्ष की अवधि में विद्यार्थियों की सैद्धांतिक कक्षाएं, प्रयोगात्मक कार्य, इन्टर्नशिप जैसे कार्यकम को पूरा करना होता है, अतः यह अवधि उचित है। डी.एल.एड. का शुल्क NCTE के अनुरूप राज्य सरकार/संबंधित संबद्धन निकाय द्वारा समय समय निर्धारित की जाती है अतः ज्यादातर प्राचार्यो ने पाठ्यकम के शुल्क को भी स्वीकार किया है अधिकतर प्राचार्यो ने भी यह भी स्वीकार किया हैं कि प्रवेश व परीक्षा की अवधि को छोड़कर भी वर्ष में 200 दिन एवं प्रति सप्ताह 36 घण्टे की अवधि को पूरा कर पाठ्यकम को पूर्ण किया जाता है। प्राचार्यो ने इन्टर्नशिप में छात्राध्यापकों की उपस्थिति को गंभीरता से लिया है और छात्राध्यापकों द्वारा 90% उपस्थिति पूर्ण की जाती है NCTE मानक में प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य समाज की सकिय सहभागिता से सामाजिक और लिंग अंतरो को दूर करते हुए समावेशी स्कूल पर्यावरण में सभी बच्चों की शिक्षा प्राप्त करने की दुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करना है प्राचार्यो ने संस्था की गुणवत्ता व पाठ्यकम की गुणवत्ता बनाये रखने में संस्था, समुदाय, पालक इत्यादि के सहयोग को स्वीकारा है।

डॉ. चकवर्ती के अध्ययन के निष्कर्षो के अनुसार डी.एल.एड. पाठ्यकम के प्रारंभ में प्रशिक्षार्थियों की अभिवृद्धि, प्रशिक्षण पूरा करने पर प्राप्त अभिवृत्ति में परिवर्तन आना प्रशिक्षण के प्रति अत्यंत सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास का संकेत देता है और सुविधा संपन्न प्रशिक्षण संस्थाओं की आवश्यकता को निरूपित करता है। अतः डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं के उद्देश्य व अवधि का पालन करना प्रशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता का सूचक है।

निष्कर्ष

1. 94.45 प्रतिशत प्राचार्यो ने प्रशिक्षण की अवधि दो वर्ष उचित माना है जबकि 05.55 प्रतिशत प्राचार्यो ने इसे अस्वीकार किया है।
2. 77.78 प्रतिशत प्राचार्यो ने डी.एल.एड. का प्रशिक्षण शुल्क को उचित माना है जबकि 22.22 प्रतिशत प्राचार्यो ने इसे अस्वीकार किया है।
3. 94.45 प्रतिशत प्राचार्यो ने प्रशिक्षण अवधि में 200 कार्य दिवस पर को उचित मानते है जबकि 5.55 प्रतिशत प्राचार्य इस सुविधाजनक नही मानते है।
4. 88.89 प्रतिशत प्राचार्यो ने स्वीकार किया है कि प्रशिक्षण में प्रति सप्ताह 36 घण्टे कार्य का लक्ष्य पूरा किया जाता है जबकि 11.11 प्रतिशत प्राचार्य इसे नहीं मानते है।
5. 77.78 प्रतिशत प्राचार्यो छात्राध्यापको की उपस्थिति स्वीकारते है जबकि 22.22 प्रतिशत प्राचार्य छात्राध्यापको की उपस्थिति से संतुष्ट नहीं है।
6. डी.एल.एड. के नये पाठ्यकम को 88.88 प्रतिशत प्राचार्य सक्षम मानते है जबकि 11.12 प्रतिशत प्राचार्य इसे सक्षम नही मानते।
7. 61.11 प्रतिशत प्राचार्यो ने समुदाय के सकिय सहयोग को माना है। 38.89 प्रतिशत प्राचार्य समुदाय के सहयोग नही मिलने की बात करते है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

चन्द्रशेखर, के. (2000)– एन इवैलूयेटिव स्टडी आफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स एजुकेशन प्रोग्राम इन आन्ध्रप्रदेश, पी–एच.डी. थिसिस, एजुकेशन श्री वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय, तिरूपति।

चन्द्रशेखर, के. (2007)– "टीचर एजुकेशन्स पर्सपेक्टिव्स आफ डाईट्स फेसीलिटीज एण्ड दीयर रिलेशन्स टू सर्टेन पर्सनल एण्ड डिमोग्राफिक वैरियेबल्स" पर्सपेक्टिव्स इन एजुकेशन हरिनगर रेसकोर्स बडौदा, वाल्यूम 23 (2), अप्रैल 2017 पृष्ठ : 92–104।

डेलर्स, जे. एट. आल (1996)– "क्वालिटी टीचर्स, लर्निंग: दी टेजर विदिन" रिपोर्ट टु यूनेस्को ऑफ दी इण्टरनेशनल कमीशन आन एजूकेशन फार दी ट्वेन्टी फर्स्ट सेन्चुरी, पृष्ठ–146 पेरिस, यूनेस्को, कोटेड इन दी इण्डियन्स जर्नल फार टीचर एजूकेशन, एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली, वाल्यूम (1), अगस्त 1998।

दास,आर.सी.एण्ड जंगीरा, एन.के. (2004)– ए ट्रेण्ड रिपोर्ट, टीचर एजुकेशन' थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', नई दिल्ली,एन.सी.ई.आर.टी. पृष्ठ 782–789।

दीपा कृष्णा एण्ड सरोज आनन्द (2006)– गुणवत्तापरक प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण–जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थाओं की भूमिका॰ अन्वेषिका 3 (2) दिसंबर 2006, पृष्ठ 75 से 80।

गवर्नमेंट आफ इंडिया (1989)– गाइडेन्स आफ डाइट नई दिल्ली, मिनीस्टरी आफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट, डिपार्टमेन्ट आफ एजूकेशन कोटेड

इन पर्सपेक्टिव्स इन एजुकेशन, वाल्यूम 23 (2), अप्रैल 2007।

ए. (1996)– एन इनवेस्टीगेशन इन्टू द परसेप्सन आफ स्टूडेन्ट टीचर्स आन देयर टीचर ट्रेनिंग, अनपब्लिस्ड एम.एड डिजरटेशन, एस.वी. विश्वविद्यालय, तिरुपति।

यशवन्ती (2013)– "जयपुर जिले के बी. एस. टी. सी. संस्थाओं में शैक्षिक गुणवत्ता हेतु किए जा रहे प्रयास"– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. थिसीस एजू. वनस्थली, राजस्थान।

विनीता (2009–10)– " छत्तीसगढ़ राज्य की जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थाओं की सुविधाओं के विषय में प्रारंभिक .शिक्षक–प्रशिक्षकों का प्रत्यक्ष बोध: उनकी आयु, लिंग, शैक्षिक योग्यता तथा अध्यापन अनुभव के विशेष सन्दर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन रिसर्च थीसिस, बिलासपुर (छ.ग.)।

Multi-disciplinary Inte... ...al Journal

Certificate of Paper Publication

Shrinkhala

E-ISSN 2349-980X
P-ISSN 2321-290X

SJIF- 5.921
GIF-0.543
IIJIF-6.038

RNI UPBIL/2013/55327
Indexed Google

Shrinkhala Ek Sodhparak Vaicharik Patrika

This is to certify that the paper titled छत्तीसगढ़ के शासकीय व अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं के प्राचार्यो के दृष्टिकोण से संपूर्ण गुणवत्ता मूल्यांकन : प्रशिक्षण के उद्देश्य एवं अवधि के संदर्भ में एक अध्ययन

Authors	Designation	Department	College
सत्यप्रकाश यादव	शोधार्थी	शिक्षा शास्त्र	पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर, भारत
प्रकृति जेम्स	सहायक प्राध्यापक	शिक्षा शास्त्र	पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर, भारत

has been published in our UGC Approved International Journal

vol. 6 issue 7 month March(Part-2) year 2019

The mentioned paper is measured upto the required.

Dr Rajeev Misra
(Editor/Secretary)

4

Dr. Asha Tripathi
(Vice-President)

Social Research Foundation

Non Governmental Organisation

10/ SR/05/10224/ Tika Ram

128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208011

28) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना
Mrs. Meshram ,Khursipar Bhilai

29) "वर्तमान में कृषि श्रमिकों की समस्यायें : कुमाऊँ के विशेष सन्दर्भ में ||131
डॉ.निशा, डॉ.मुकेश जोशी, अल्मोड़ा

30) छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति .... ||135
डॉ.बन्सो नुरूटी,रायपुर ; छ.ग.

31) प्रो०अमर्त्य सेन का व्यक्तित्व, कृतित्व, जीवनवृत्त तथा उनके आर्थिक विचारों.... ||138
डॉ० मीनू पाण्डे,कानपुर (उ०प्र०)

32) सोशल मीडिया का विद्यार्थियों के मानव मूल्यों पर प्रभाव ||143
डॉ. मंजू चौधरी, सरोज कंवर राठौड,जयपुर

33) भारतीय संघीय व्यवस्था में बदलाव : लोकतांत्रिक आधार पर पंचायती राज.... ||147
डॉ० श्याम नारायन,हमीरपुर

34) मिथक : समकालीनता में पापुलर लिटरेचर ||149
दिवाकर विक्रम सिंह, झांसी

35) कारीगर एवं शिल्प कौशल ||154
Smt. Needhi Singh, Arun Kumar Singh , Chhattisgarh

36) भारत पाकिस्तान संघर्षो में वाह्रय शक्ति की भूमिका ||156
वासुदेवन मणि त्रिपाठी, रत्नेश कुमार,प्रयागराज

37) जीवन मूल्यों का अर्थ ||160
सतीष यादव, ग्वालियर,(म०प्र०)

38) छत्तीसगढ़ के शासकीय एवं अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण ..... ||168
डॉ.प्रकृति जेम्स, सत्यप्रकाश यादव, छत्तीसगढ़ बिलासपुर

39) स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना का कार्यान्वयन एवं उपलब्धि ||171
डा० पूनम कुमारी, सहरसा (बिहार).

40) स्नातकोत्तर स्तर अनुसूचित, पिछड़े एवं सामान्य जाति विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य .... ||175
पूनम राठौर,प्रो०भावेशचन्द्र दूबे, मेरठ। ||179

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 6.039(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | June 2019 Issue-54, Vol-01 | 0171

38

छत्तीसगढ़ के शासकीय एवं अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं का अकादमिक उपलब्धियों की उत्तमता के संबंध में 'संपूर्ण गुणवत्ता मूल्यांकन'

डॉ. प्रकृति जेम्स
शोध निर्देशिका
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा)
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
वि.वि. छत्तीसगढ़ बिलासपुर

सत्यप्रकाश यादव
शोधार्थी (शिक्षा)
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
वि.वि. छत्तीसगढ़ बिलासपुर

****

प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा की दृष्टि से ''प्रारंभिक शिक्षा का लोकव्यापीकरण'', ''गुणवत्तापूर्ण सभी के लिए शिक्षा'', आदि राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख लक्ष्य रहें हैं। इसी क्रम में ६ से १४ वर्ष की आयु समूह के बच्चों को अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा देना, आज उनका मौलिक अधिकार बन गया है, साथ ही यह लक्ष्य देश का संवैधानिक उत्तरदायित्व भी हो गया है। उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में हम यह कह सकते हैं शिक्षण जैसे उत्तम में कार्यशिक्षक की भूमिका केन्द्रीय हो गई है। वर्तमान समय में शिक्षक से हमारी अपेक्षाएँ बढ़ गयी है, आज उसे जहां स्वयंविद्यार्थी, समाज, शाला, व्यवसाय इत्यादि के प्रति समर्पित होना है, वहीं विशय—विशेषज्ञ, चिंतक के रूप में भी अपने को साबित करना है। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग १९९६ के अनुसार शिक्षा के चार स्तम्भ— ज्ञान के लिए सीखना, स्व—अस्तित्व के लिए सीखना, कार्य के लिए सीखना एवं सहअस्तित्व के लिए सीखना है, इन चार स्तम्भों का आधार शिक्षक है। अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं, इन अपेक्षाओं को पूरा करने हेतु एक कुशल शिक्षक तैयार करना होगा और यह तभी संभव है जब देश में शिक्षक को उत्तम प्रशिक्षण देने के लिए मानक के अनुसार सुविधा सम्पन्न उच्च कोटि शासकीय— अशासकीय की शिक्षक—प्रशिक्षण संस्थायें हो। देष के सभी राज्यों में ऐसी संस्थाओं के गठन हेतु विभिन्न स्तरों पर प्रयास किये जा रहें है।

इसी तारतम्य में स्थानीय एवं जिला स्तर पर प्रारंभिक शालाओं के शिक्षकों को सेवापूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण देने तथा सभी प्रकार के उत्तरदायित्व और संसाधन उपलब्ध कराने के लिए शासकीय एवं अशासकीय डी.एल.एड. शिक्षक—प्रशिक्षण संस्थायें संचालित की गयी है और इनकी संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। इन संस्थाओ के प्रमुख लक्ष्य निम्नानुसार वर्णित हैं —

❖ प्रारंभिक शिक्षा का लोकव्यापीकरण करना।

❖ प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सफल बनाने की दृष्टि से अकादमिक तथा अन्य संसाधनों की पूर्ति करना।

❖ प्रशिक्षण संस्थाये स्वयं को इतना उन्नत बनायेगी कि उनसे प्रारंभिक षिक्षा को आगे बढ़ने में सहायता मिल सके।

❖ जिले की विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं को विकास की दिशा में आगे बढाने के लिये योजनाओं का निर्माण एवं उनका क्रियान्वयन करना।

❖ अध्यापकों को उच्चस्तरीय सेवापूर्व—सेवाकालीन प्रशिक्षण देना।

❖ अध्यापक शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया में आस—पास के साधनों का अधिकतम प्रयोग कर सकें।

❖ प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययन—अध्यापन की सहायक सामग्री का निर्माण करना तथा मूल्यांकन उपकरण निर्मित करना।

❖ क्रियात्मक अनुसंधान पर बल देना।

❖ दिव्यांगों एवं वंचित वर्ग के बच्चों की समावेशी शिक्षा की व्यवस्था करना ।

उपरोक्त लक्ष्यों को पूरा करने हेतु प्रारम्भिक शालाओं के शिक्षकों को उच्च स्तार प्रशिक्षण देने एवं सभी प्रकार के संसाधन हेतु डी. एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाए स्थापित की गयी। डी.एल. एड., अध्यापक शिक्षा का व्यावसायिक पाठ्यक्रम है जिसका उद्देश्य कक्षा आठवीं तक के अध्यापको को तैयार करना है। डी.एल.एड. पाठ्यक्रम का उद्देश्य समाज की सहभागिता से सामाजिक विषमताओ को दूर करते हुए समावेशी स्कूल पर्यावरण में सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने की बुनियादी आवश्यकता को पूर्ण करना है। शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को कार्य करते लम्बा समय बीत गया है अब उनके कार्य प्रणाली, अध्यापकीय व्यवहार, एवं दक्षता का मूल्यांकन का उपयुक्त समय आ चुका है। देश के प्रत्येक राज्य के प्रत्येक जिले में शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान संचालित हो रहे है यह शिक्षक–प्रशिक्षण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इन संस्थानों को जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP) तथा सर्वशिक्षा अभियान जैसे महत्वकांक्षी राष्ट्रीय योजनाओं के सफल कियान्वयन का आधार मानते हुये, इन्हें सभी प्रकार की अधुनातन सुविधायें एवं तकनीक उपलब्ध कराने है जिसके लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिशद, नयी दिल्ली (NCTE) ने मानक व दिशा निर्देष निर्धारित किये है।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

बनर्जी (१९६७) ने भारत में प्राथमिक षिक्षक प्रशिक्षण पर अध्ययन किया। इनके अध्ययन के निम्न परिणाम थे कि शिक्षक प्रशिक्षण, में बहुत सी कमियां थीं। परिवर्तनों और समाज की आवष्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षक प्रशिक्षण में आमूल परिवर्तन और समाज की आवष्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षक प्रशिक्षण में आमूल परिवर्तन आवष्यक था। मूल्यांकन व शिक्षण पद्धतियां पुरानी थीं।

मूलैया (१९६८) ने मध्यप्रदेश में शिक्षक प्रशिक्षण की स्थिति का अध्ययन किया। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि मध्य प्रदेश के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय का अभावग्रस्त थे। विद्यालयों में संसाधनों की कमी थी। मूल्यांकन और शिक्षण विधि परंपरागत थी। पुरूषों की संख्या महिलाओं की अपेक्षा अधिक थी।

गुप्ता (१९८०) द्वारा माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवष्यकता पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के यह परिणाम निकले कि शिक्षक प्रशिक्षकों की शैक्षिक योग्यता एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण में सह संबंध होता है। शिक्षण अनुभवों का प्रशिक्षण कार्य पर प्रभाव पड़ता है। समाजोपयोगी कार्य व्यावसायीकरण सामुदायिक कार्य व शिक्षण पद्धति आदि का ज्ञान देना आवष्यक है।

गुप्ता (१९८२) द्वारा भारत में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन किया गया है। इस अध्ययन के ये परिणाम प्राप्त हुए कि ६१ से ७० के बीच संस्थानों की वृद्धि हुई है। ८३ प्रतिशत शिक्षक प्रशिक्षक पुरूष थे। प्रशिक्षक संस्थानों की कार्य प्रणाली प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन प्रणाली परंपरागत थी। ज्यादार गांवों से संबंधित थे। केवल १८ प्रतिशत छात्र एम.एड. उपाधि प्राप्त थे। शीरीरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को महत्व नहीं दिया जाता था। स्थानीय संस्थानों की व्यवस्था से ठीक थी। वाद–विवाद विधि ज्यादा प्रचलित थी।

राय (१९८२) ने उत्तर प्रदेश तथा गुजरात के शिक्षा महाविद्यालयों और अभ्यास शिक्षण शालाओं (Practice Teaching Schools) से संबंधित समस्याओं पर अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला है कि :–

- शिक्षा महाविद्यालयों एवं अभ्यास शालाओं के परिप्रेक्ष्य में अनेकों कमियाँ उजागर हुई हैं। षिक्षा महाविद्यालयों एवं अभ्यास शालाओं के बीच परस्पर सहयोग का अभाव के साथ–साथ यह भी पता चलता है कि शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों द्वारा अभ्यास शालाओं में जाने से उनके कार्यक्रम, एवं अन्य नियमित गतिविधियों में बाधा उत्पन्न होती है।
- इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि अभ्यास शालाओं एवं शिक्षक– प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रभावशाली सहयोग होना चाहिए।

सिन्हा (१९८२) ने बिहार में शिक्षक–शिक्षा विषय पर अध्ययन किया है और निष्कर्ष निकाला है कि –

• प्राथमिक स्तर पर लगभग ६० प्रतिषत शिक्षक–प्रशिक्षक बी.एड. प्रशिक्षित है परन्तु उनका कार्य संतोशजनक नहीं पाया गया।

• ७० प्रतिशत महाविद्यालय में स्वयं का भवन नहीं पाया गया और ६५ प्रतिषत महाविद्यालयों में दयनीय स्थिति वाले भवन पाये गये।

• अधिकांश शिक्षा महाविद्यालयों में स्टॉफ, पुस्तकालय, उपकरण तथा प्रयोगशाला अपर्याप्त पाये गये।

• आधुनिक नवाचारी कार्यक्रमों का समावेश अभी तक शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों में नहीं हो पाया है।

• सेवाकालीन प्रशिक्षण न तो प्रभावशाली ढंग से दिये जाते हैं और न ही अध्यापन अभ्यास कार्य कराने में पर्यवेक्षक शिक्षक पर्याप्त ध्यान देते।

अध्ययन का औचित्य

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिशद् (NCERT) राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विष्वविद्यालय (NUEPA) तथा डाईट जैसी राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय संस्थाओं के द्वारा योजना के क्रियान्वयन, लक्ष्य प्राप्ति तथा उससे अपेक्षाओं पर किये गए राष्ट्र स्तरीय मूल्यांकन निष्कर्ष बहुत अधिक सकारात्मक एवं उत्साहवर्धक नहीं रहे है।

इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ में संचालित डी.एल. एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में मानको के अनुरूप कार्यो का मूल्यांकन करना विषेश शैक्षिक महत्व का होगा क्योंकि इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष के प्रकाश में डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं की वास्तविक स्थितियों, का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा और समय रहते ही योजनाबद्ध ढंग से उनकी त्रुटियों को सुधारने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। इस संदर्भ में यह पता लगाना कि छत्तीसगढ़ राज्य कि विभिन्न शासकीय एवं अशासकीय डी. एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में सेवारत आचार्य अपने–अपने संस्थाओं कि अपेक्षाओ सुविधाओ, प्रयासो, क्रियाकलापों, गुणवत्ता आदि से कितना परिचित है उनकी सजगता इस ओर कितनी है, विषेश महत्व का है क्योंकि आचार्यो की ऐसी ही परिकल्पनाओं, अवबोध तथा सजगता पर राज्य में डी.एल.एड. प्रशिक्षण कि योजना की सफलता निर्भर करती है। इसलिए एक ऐसा शोध अध्ययन जिससे निम्नलिखित शोध–प्रश्नों के हल ढूंढा जाये , छत्तीसगढ़ राज्य में सुदृढ़ प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत औचित्यपूर्ण होगा क्योंकि इस नवोदित राज्य में इस प्रकार का अध्ययन अभी तक चरितार्थ नहीं हुआ है। इस सर्वेक्षणात्मक अध्ययन के निष्कर्ष राज्य के लिए दिशा निर्देशक होगा।

अध्ययन का उद्‌देष्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्नांकित उद्‌देष्य निर्धारित किये गये है –

❖ शासकीय तथा अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण की संस्थाओं की अकादमिक उपलब्धियों की उत्तमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देष्यों की जांच हेतु शोध–प्रश्नों के रूप में निम्नांकित परिकल्पनायें बनायी गयी हैं –

❖ शासकीय तथा अषासकीय डी.एल.एड. प्रषिक्षण की संस्थाओं की अकादमिक उपलब्धियों की उत्तमता में अंतर होता है।

प्रस्तावित शोध विधि (Research Method)

प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णात्मक अध्ययन है जिसमे सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जायेगा।

न्यादर्ष (Sample)–

न्यादर्श के रूप में शासकीय एवं अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में कार्यरत प्राचार्य, प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षार्थी रहेंगें। प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के २ जिलों में संचालित २ शासकीय डाईट्स (जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों) एवं २ अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थायें अध्ययन का समग्र है।

अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं को यादृच्छिक विधि से चुन इन प्रशिक्षण संस्थाओं की १ यूनिट (५० सीट) के प्राचार्य, प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षार्थी न्यादर्श में शामिल हैं।

अध्ययन के चर–

प्रस्तुत अध्ययन में चर एवं उनके स्तर

अनुसार है —

स्वतंत्र चर (Independent Variable) —

डाईट डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं हेतु राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिशद् नई दिल्ली द्वारा निर्धारित कार्यक्रम एवं मानक प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्र चर है।

सहचार्यित स्वतंत्र चर—(Associated Variable)

संस्थाओं के प्रकार :—

1. शासकीय
2. अशासकीय

आश्रित चर (Dependent Variable)

शासकीय एवं अशासकीय डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं में सम्पूर्ण गुणवत्ता का मूल्यांकन गुणात्मक सूचक (Indicator) इस अध्ययन के आश्रित चर है जो राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा वर्णित है, के माध्यम से किया गया है।

❖ अकादमिक उपलब्धियों यथा — पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण में उत्तमता।

उपकरण (Tool)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में तीन उपकरणों का उपयोग किया जायेगा। तीनों उपकरण अध्ययनकर्ता द्वारा निर्मित होंगें। तीन उपकरण निम्नानुसार है —

➢ प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रश्नावली
➢ शिक्षक—प्रषिक्षकों हेतु प्रश्नावली
➢ संस्था के प्राचार्य हेतु साक्षात्कार पत्रक

प्रदत्तों का विष्लेशण

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए प्राचार्य एवं अध्यापन करा रहे आचार्यो से एवं प्रशिक्षार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से प्रदत्त संकलन किये गए।

अकादमिक सुविधाओं व कार्य संबंधी निष्कर्ष

(अ) प्रशिक्षण —

➢ प्रदर्शन कक्षाओं एवं ब्लॉक—टीचिंग कक्षाओं की संख्या पर्याप्त नहीं पायी गयी। इनकी संख्या अध्यापन—कौशल विकसित करने हेतु बढायी जानी चाहिए तथा लगभग ९५ प्रतिशत शिक्षक—प्रशिक्षकों के अनुसार स्कूल स्तर के सभी विषयों में छात्राध्यापकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

➢ लगभग ८७ प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार अध्यापन में प्रोजेक्ट सहायक सामग्री का प्रयोग होना चाहिए। कक्षागत अन्तःक्रियाओं में मल्टी—मीडिया के उपयोग से बेहतर समझ विकसित होती है, ऐसी मान्यता लगभग ९० प्रतिशत उत्तरदाताओं का है।

➢ मॉडल स्कूलों में छात्राध्यापकों से अध्यापन—अभ्यास कराकर उनके अध्यापन कौशल में सुधार किया जा सकता है।

➢ लगभग ७० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अमान्य किया है कि पाठ्य योजनाओं का अनुमोदन मात्र एक बकवास है।

➢ छात्राध्यापक कक्षाध्यापन में सही ढंग से अध्यापन सहायक सामग्री का उपयोग नहीं कर पाते। अध्यापक अभ्यास कक्षाओं में कठिन प्रकरणों का अध्यापन करने से कतराते हैं।

(ब) पाठ्यक्रम —

➢ डाईट्स के वर्तमान पाठ्यक्रम पुनरूत्थान की आवष्यकता है (८९:) तथा वर्तमान प्राइमरी स्कूल टीचर एजुकेशन के पाठ्यक्रम को पूर्णरूपेण नये सिरे से संशोधित करने की आवष्यकता (७०:) है।

सन्दर्भ ग्रंथ (Reference)

चन्द्रशेखर, के. (२०००)— एन इवैलूयेटिव स्टडी आफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स एजुकेशन प्रोग्राम इन आन्ध्रप्रदेश, पी—एच.डी. थिसिस, एजुकेशन श्री वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय, तिरूपति।

चन्द्रशेखर, के. (२००७)— '' टीचर एजुकेशन्स पर्सेप्सन्स आफ डाईट्स फेसीलिटीज एण्ड दीयर रिलेसन्स टू सर्टेन पर्सनल एण्ड डिमोग्राफिक वैरियेबल्स'' पसपिक्टिव्स इन एजुकेशन हरिनगर रेसकोर्स बडौदा, वाल्यूम २३ (२), अप्रैल २०१७ पश्ठ : ९२—१०४

डेलर्स, जे. एट. आल (१९९६) : ''क्वालिटी टीचर्स, लर्निंग: दी टेजर विदिन' रिपोर्ट टु यूनेस्को ऑफ दी इण्टरनेशनल कमीशन आन एजुकेशन फार दी ट्वेन्टी फर्स्ट सेन्चुरी, पृष्ठ—१४६ पेरिस, यूनेस्को, कोटेड इन दी इण्डियन्स जर्नल फार टीचर एजूकेशन, एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली, वाल्यूम ;१) , अगस्त १९९८

…आर.सी. एण्ड जंगीरा, एन.के. (२००४)'ए … रिसर्च, टीचर एजुकेशन' 'थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन', नई दिल्ली,एन.सी.ई.आर.टी. पृष्ठ : …–७८९

दीपा कृष्णा एण्ड सरोज आनन्द (2006), … प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण–जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थाओं की भूमिका अन्वेशिका ३ ;२) … २००६, पृष्ठ ७५ से ८०

गव्हर्नमेंट आफ इंडिया (१९८९)– गाइडेन्स … डाइट नई दिल्ली, मिनीस्टरी आफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेन्ट, डिपार्टमेन्ट आफ एजूकेशन कोटेड इन … इन एजुकेषन, वाल्यूम २३ ;२), अप्रैल ;००७

गायत्री, ए. (१९९६)– एन इनवेस्टीगेशन … द परसेप्सन आफ स्टूडेन्ट टीचर्स आन देयर टीचर ट्रेनिंग, अनपब्लिस्ड एम.एड. डिजरटेशन, एस.व्ही. विश्वविद्यालय, तिरूपति

गौड़, यशवन्ती (२०१३)–''जयपुर जिले के बी. एस. टी. सी. संस्थाओं में शैक्षिक गुणवत्ता हेतु किए जा रहे प्रयास''– एक विश्लेशणात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. थिसीस एजू. वनस्थली, राजस्थान

सिंह, विनीता (२००९–१०)– '' छत्तीसगढ़ राज्य की जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थाओं की सुविधाओं के विशय में प्रारंभिक शिक्षक–प्रषिक्षको का प्रत्यक्ष बोध: उनकी आयु, लिंग, शैक्षिक योग्यता तथा अध्यापन अनुभव के विशेष सन्दर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन रिसर्च थीसिस, बिलासपुर (छ.ग.)

□□□